'ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्तिः, जीवनं सत्यशोधनम्'

विनोबा-प्रवचन

(सप्ताह में तीन बार—मंगल, गुरु और शनि को प्रकाशित)

वर्ष ३, अंक १२४ | वाराणसी, गुरुवार, २९ अक्टूबर, १९५९ | पचीस रुपया वार्षिक

प्रार्थना-प्रवचन

कठुआ (जम्मू) १९-९-'५९

सम्यक् जीवन के लिए सम्यक् दृष्टि की आवश्यकता

अभी हम लगभग चार महीने कश्मीर में रहे । वहाँ बड़े-बड़े पहाड़, जंगल और खूबसूरत मंजर देखे। देखते समय मन में यह सवाल उठता था कि दर असल खूबसूरती कहाँ है ? क्या सामने की कुदरत खूबसूरत है ? नहीं । यदि वह खूबसूरत होती तो इन आँखों के बिना भी दिखाई पड़ती ! इसीलिए कुदरत जितनी खूबसूरत है, उससे ज्यादा खूबसूरत हमारी आँख है। कोई हमें गाना सुनाये तो वह मीठा लगता है। गाना मीठा तो है, लेकिन उससे भी ज्यादा मीठा है कान। कान नहीं होते तो गाना कैसे सुनते ? नाक न होती तो हमें फूलों की खुशबू नहीं मालूम होती। जीभ में ऐसी ताकत है कि उससे नमक और शक्कर की पहचान हो जाती है।

दोहरा दान

भगवान की बड़ी कृपा है कि उसने उधर फूल पैदा किये और इधर हमारे नाक में ऐसी कूवत दे दी कि फूलों की खुशबू पहचानी जा सके। उधर शब्द-लफ्ज पैदा किये और इधर हमें कान दिये। इस तरह भगवान ने दोहरा दान दिया है। उसमें एक बाहर की दुनिया में है और दूसरा है अन्दर, अपने पास। यह देह बाहरी दुनिया का है। दुनिया में जो मिट्टी है, उसीसे यह जिस्म बना है। इन्सान इस जिस्म को यहीं छोड़कर चला जाता है। खेती-बारी, मवेशी, घर, दौलत आदि सभी यहीं धरे रह जाते हैं। इन्सान के साथ में जाती है, अन्दर की चीज। मन के जरिये, आँख के जरिये, और दूसरे के जरिये जो ज्ञान हासिल किया जाता है, वह साथ जाता है।

भगवान ने हमें आँख, कान, हाथ दिये हैं। हम आँखों से अच्छी किताबें पढ़ेंगे, कानों से भगवान का नाम सुनेंगे और हाथों से दान देंगे, दूसरे की मदद करेंगे तो हमारा दिल पाक होगा। वही पाक दिल लेकर हम दुनिया से कूच करेंगे और इन्हीं आँखों का, कानों का, हाथों का बुरा उपयोग करेंगे तो नापाक बनेंगे। नापाक बनने से चित्त को समाधान नहीं होता। पाक बनने से चित्त को समाधान मिलता है। उससे दुनिया में रहने में भी तसल्ली होगी।

सच्चा समाधान

हम बड़े-बड़े मकानों में रहते हैं, हवाई जहाज में उड़ते हैं, मोटरों में घूमते हैं, फिर भी हमारे दिल को तसल्ली नहीं मिलती। लेकिन अगर हम इन हाथों से परोपकार का काम करें तो तसल्ली मिलती है। दुःखियों की, गरीबों की, भूखों की जितनी हमसे बन सके, उतनी सेवा करते हैं तो तसल्ली मिलती है। तसल्ली ही हमारी जिन्दगी में सबसे बेहतरीन चीज है। हम वही हासिल करें। मीठा आम खाने से जीभ को जो समाधान होता है, उससे ज्यादा समाधान अपने पड़ोसी को खिलाने में होता है। खिड़की बन्द करके खाने में जो समाधान नहीं होता, वह भूखे भगवान को खिलाने से होता है। दूसरों को खिलाकर खाने में में जो समाधान है, वही सबसे बड़ी दौलत है।

शेर, भेड़िया वगैरह जानवर जंगल में रहते हैं। वे एक-दूसरे की परवाह नहीं करते। जिसे शिकार मिली, वह खा लेता है। दूसरे की चिन्ता करना जानवरों से नहीं होता, लेकिन हम जानवर नहीं हैं, मनुष्य हैं। जंगल में नहीं रहते, गाँवों में रहते हैं। इसलिए हम एक-दूसरे की परवाह नहीं करेंगे तो गाँव में रहने से क्या फायदा है ? गाँव में कोई भूखा हो तो उसे खिलाकर खाना चाहिए, यह बात जो नहीं समझता है, वह गाँव में क्यों रहता है ? भेड़ का नसीब भेड़ के साथ, शेर का नसीब शेर के साथ है, वैसे ही आपका नसीब आपके साथ और मेरा नसीब मेरे साथ है और हम एक-दूसरे की परवाह नहीं करते, छोटी-छोटी अलग-अलग मालकियत बनाये रखते हैं तो गाँवों की वही हालत हो जायगी, जो जंगल की है। हम गाँव में इकट्ठा इसलिए हैं कि एक-दूसरे पर प्यार करें। अच्छे किसान पहले बैलों को खिलाते हैं, फिर खुद खाते हैं। जो बैलों की परवाह नहीं करते, वे अच्छे किसान नहीं होते। अच्छे किसान का लक्षण ही यह है कि वह अपने बैल की फिक्र करता है। इसी तरह गाँव के भले लोगों का यह लक्षण है कि वे गाँव के भूखों, दुखियों के पास पहुँचें और उन्हें इमदाद करें।

भिखमंगे न बढ़ायें

अभी यहाँ एक अंधा लड़का बैठा है। गाँव का बड़ा शख्स सोचे कि मैं इस अंधे की परवाह क्यों करूँ तो भगवान उसे कहेगा कि तू आँख रहते हुए भी अंधा है। इसे तो बगैर आँख का पैदा किया, पर तुम आँख पाकर भी अंधे बन गये ! इसलिए अंधे के लिए भी

सहानुभूति से सोचने की जरूरत है। हाँ, यह जरूर है कि अंधे को ऐसे ही नहीं खिलाना चाहिए। उसे भी काम देना चाहिए। किसीकी एक इन्द्रिय कमजोर हो जाय तो दूसरी इन्द्रिय बलवान होती है। इसलिए जो इन्द्रिय बलवान हो और जिससे वह काम कर सके, ऐसा काम उसे सिखाना चाहिए। गरीबों को खिलाने का यह मतलब नहीं है कि उनको बनी-बनायी रोटी खिलायी जाय। ऐसे ही खिला-खिलाकर इस देश में भिखमंगों की फौज खड़ी कर दी गयी है। जब तक देश में ऐसे मुफ्तखोर लोग रहेंगे, तब तक यहाँ कोई तरक्की नहीं हो सकेगी। गरीबों को, अपाहिजों को और भूखों को उनके अनुकूल काम देना, रोजगार देना ही उन्हें खिलाना है।

सुख का रास्ता

गाँव में हर किसीको काम मिलना चाहिए, अच्छा खाना मिलना चाहिए, साफ-सुथरे कपड़े मिलने चाहिए और थोड़ी-सी जमीन मिलनी चाहिए। इसके लिए सबको मिलकर सबकी चिन्ता करनी चाहिए। आज क्या होता है? हर काम सरकार करेगी, यही हम सोचते हैं, यानी हर बात में सरकार का मुँह ताकते हैं। हम कुछ न करें, सब कुछ सरकार ही करे, यही हम सोचते हैं। हमारा यह सोचना एकदम गलत है। इससे इन्सानियत नहीं पनपेगी। मान लीजिये, सरकार अच्छा काम भी कर लेगी तो भी बहुत इन्सानियत नहीं पनपेगी। उसके लिए तो हमें खुद पुरुषार्थ करना पड़ेगा। हमें सोचना पड़ेगा कि आखिर हमारा कर्तव्य क्या है? मेरे पास जो कुछ है, उसका एक हिस्सा मुझे गाँव के गरीबों को देना चाहिए। उसपर सिर्फ मेरा ही नहीं, सबका हक है। इस तरह हम सोचेंगे तो सुख पाने का रास्ता खुलेगा।

क्या आप यह समझते हैं कि परमात्मा ने आपके लिए दुःख की जिन्दगी बनायी? नहीं। वह तो परम कृपालु है, रहमान है। उसने हम सबके लिए सुख की जिन्दगी बनायी है, लेकिन हमींने उसमें दुःख पैदा कर लिये हैं। उसने फल पैदा किये, हमने उनकी शराब बना ली तो उस दुःख के लिए हम ही जिम्मेवार हुए। उसने तो मेवे, फल, तरकारी, अनाज, पेड़ पैदा किये, गाय, बैल, घोड़े वगैरह जानवर भी पैदा किये और हमारे काम के लिए आँख, नाक, कान, और दिल दिया। अब देने का बाकी क्या रहा? भगवान की देनें, नियामतें अनगिनत हैं, फिर भी हम उनसे फायदा नहीं उठाते तो उसके लिए भगवान जिम्मेवार हो सकता है? गाय गोबर और दूध दोनों देती है। हम दूध का उपयोग लीपने के लिए और गोबर का उपयोग खाने के लिए करें तो दोष किसका होगा? भगवान की नियामतों का सही उपयोग करके ही हम चैन से रह सकते हैं।

२+२=४ : २-२=०

समाज में हम एक-दूसरे की ताकत को काटते हैं। इसलिए आज हम २+२=४ होने के बजाय २-२=० होते हैं। इस तरह टकराने से कैसे चलेगा? हमें मिल-जुलकर रहना चाहिए। आज हरिजन, परिजन, रिफ्यूजी, सोल्जर्स, गुजर आदि हर कोई अपने-अपने दुःख की कहानी सुनाते हैं। सारे समाज का, मुकम्मिल समाज का कोई नहीं सोचता। इसीसे आज ताकत नहीं बन रही है। समाज का एक दिल बनने के बजाय दिल के टुकड़े हो रहे हैं। इसीलिए गाँव-गाँव जाकर आज हम समझाते हैं कि भाइयो, आपके पास जो चीज है, वह सब के लिए है। हवा, पानी के समान जमीन भी सबके लिए है। भगवान ने जो ताकतें दी हैं, उनका उपयोग गाँव की खिदमत करने में करना चाहिए। भगवान कहता है कि 'मैंने तुम्हें अक्ल दी है, वह तुम्हारी आजमाइश करने के लिए, जाँच करने के लिए दी है।' तुम इस अक्ल का गलत ढंग से इस्तेमाल करोगे, दूसरों को लूटने में, चूसने में इस्तेमाल करोगे तो तुमपर भगवान का गुस्सा उतरेगा और अच्छे ढंग से इस्तेमाल करोगे, लोगों की खिदमत में इस्तेमाल करोगे तो तुम्हें भगवान का आशीर्वाद हासिल होगा। भगवान ने हमें अक्ल, ताकत, दौलत और जमीन दी है और साथ-साथ दिल और दिमाग भी दिया है। इसलिए हम सबका अच्छा उपयोग करें और प्रेम से मिल-जुलकर रहें तो जीवन अच्छा बनेगा। ◆◆◆

प्रार्थना-प्रवचन

टिकरी (जम्मू-कश्मीर) ५-१-'५९

इस तहरीक का नाम है सर्वोदय, जिसके मानी हैं सबका भला

यह छोटा गाँव है। यहाँ कुछ जमीन मिली है। ऐसे छोटे गाँवों में दिल खोलकर दान देनेवाले लोग मिलते हैं, लेकिन इतने से दान से मैं बिलकुल खुश नहीं हूँ। मेरा विचार यह है कि भूदान का काम परमेश्वर की भक्ति का मार्ग है। हिंदुस्तान में आप देखेंगे कि लोगों में परमेश्वर के लिए भक्ति, प्रेम भरा है। ऐसी हालत में अगर हम सबके पास पहुँचें और प्रेम से समझा दें तो जितने मालिक हैं, उतने दानपत्र मिल सकते हैं, इसमें मुझे कोई शक नहीं है।

मैं कोई खयाली बात आपके सामने नहीं रख रहा हूँ। आठ साल की पदयात्रा में छह लाख लोगों ने दान दिये हैं। उसमें ऐसे कई अनुभव आये कि जहाँ कुल के कुल लोगों ने दान दिया है, उससे मुझे संतोष हुआ, लेकिन अचरज नहीं हुआ, क्योंकि मैं जानता था कि हिंदुस्तान के लोग भक्ति की बात सुनना चाहते हैं। ठीक तरह से समझानेवाला कोई शख्स मिल जाता है तो उनके दिल खुल जाते हैं। उस लिहाज से आज का काम छोटा है, फिर भी अच्छा है। कश्मीर में अभी हवा बन रही है। यहाँकी हालत दूसरे सूबों जैसी नहीं है। यहाँ-पर कानून से जमीन ली गयी है, उससे कुछ मसले भी पैदा हुए हैं, लोगों के बीच कुछ भेदभाव पैदा हुए हैं और कुछ अच्छा काम भी हुआ है।

दूसरी बात यह है कि इस स्टेट की हालत डाँवाडोल मानी गयी है, जो नाहक मानी गयी है, लेकिन उसकी वजह से हिंदुस्तान में भूदान-ग्रामदान के जो अच्छे काम बने, उसकी फिजा यहाँ नहीं पहुँची और हमारे आने के बाद ही यहाँ काम शुरू हुआ। यहाँपर कोई कारकून भी नहीं थे। जो कारकून हैं, वे सियासी पार्टियों में बँटे हुए हैं, इसलिए लोगों की खिदमत करने-वाले कोई नहीं हैं। इस निगाह से आज का आपका काम अच्छा हुआ है और इसीलिए मैं आप सबको बधाई देता हूँ।

www.vinoba.in

जिन्होंने दान दिया, जिन्होंने दान हासिल करने के लिए मेहनत की और जिन्हें जमीन मिलेगी, उन सबको मैं बधाई दूँगा। यह ऐसी तहरीक है कि जिसमें देनेवाले,दिलानेवाले और लेनेवाले सबका भला होता है, प्यार से जमीन माँगी जाती है और प्यार से दी जाती है। जहाँ प्यार से काम बनता है, वहाँ सबका भला ही भला होती है। इसीलिए इस तहरीक का नाम है सर्वोदय, जिसके मानी हैं सबका भला।

भूदान भक्तिमार्ग है

मैं मानता हूँ कि भूदान भक्ति-मार्ग है, लोग भक्ति करते हैं, भगवान का नाम लेते हैं, उसपर श्रद्धा रखते हैं। कुछ लोग डर से रखते हैं। डर से प्यार अच्छा है। भगवान कहाँ रहते हैं? कोई कहते हैं कि वैकुंठ में, कैलाश में या अमरनाथ में रहते हैं, लेकिन भगवान इस तरह किसी एक जगह नहीं रह सकते। वे तीर्थक्षेत्र में भी रहते हैं, लेकिन लोग समझते हैं कि वे वहीं रहते हैं, यह गलत है। वे हरएक के हृदय में रहते हैं, हमारा यह चोला याने बाहर का कपड़ा है, उसके अन्दर मन है, मन के अन्दर सोचनेवाली बुद्धि है, बुद्धि के अन्दर हृदय है और उसके अन्दर भगवान विराजमान है। क्या हमारा बाहर का कपड़ा फट गया तो क्या उसके मानी यह हैं कि जिस्म फट गया? बाहर का कपड़ा फटे तो भी जिस्म कायम है। वैसे ही जिस्म फट जाय तो भी अन्दर की चीज कायम रहती है। किसीकी आँख फूट जाय और वह अन्धा बन जाय तो भी उसका मन कायम रहता है। जितना मन हमारे पास है, उतना ही उस अन्धे के पास है। मान लीजिये कि कल किसीका मन बिगड़ गया तो भी अन्दर की बुद्धि साबित रहती है, जिससे मनुष्य सोच सकता है। ऐसा भी मौका आ सकता है कि इन्सान की बुद्धि बेकार हो जाय, वह सोच ही न सके, लेकिन फिर भी उसका हृदय साबित रहता है। हृदय में प्यार भरा हुआ रहता है और उस हृदय के अन्दर भगवान विराजमान रहते हैं। ऊपर की चीजें फूट जायँ, टूट जायँ तो भी अन्दर के भगवान साबित रहते हैं। हर जिस्म में जो भगवान रहते हैं, उनकी भक्ति हमें करनी है।

दिल में राम! मुख में नाम!! हाथ में काम!!!

इधर हम आपस-आपस में लड़ते हैं। भाई-भाई का नहीं बनता, पति-पत्नी का नहीं बनता। पड़ोसियों में झगड़ा होता है तो फिर भगवान की भक्ति कैसे होगी? मन्दिर में जाकर मूर्ति का दर्शन करना, फूल चढ़ाना–इतने से ही भगवान की भक्ति नहीं होती है। भक्ति के लिए हमें अपने सब भाई-बहनों पर प्यार करना चाहिए, उनपर एतबार रखना चाहिए। जब हमारी जिंदगी प्यार से भरी हुई होगी, तब हमसे भगवान की भक्ति होगी। फिर भगवान का नाम लेने से ही भक्ति नहीं होगी। यद्यपि वह भी भक्ति का एक प्रकार है। हम भगवान का नाम लेते हैं तो प्रभु उसे सुनते हैं, लेकिन कहते हैं कि बेटा तू मेरा नाम लेता है, इसलिए मैं तुमपर खुश हूँ। अब मैं तुझे अच्छी बुद्धि देता हूँ, इसलिए तू मेरी पूजा कर, सेवा में लग। मैं मूर्ति में हूँ, लेकिन सब लोगों में भी हूँ। इसलिए तू लोगों को राजी करने का, दुखियों को ठंडक पहुँचाने का, गिरे हुए को उठाने का, डूबनेवालों को बचाने का काम कर। तू मेरा नाम लेता है, यह अच्छी बात है लेकिन मेरे नाम के साथ मेरा काम कर। मुख में नाम, हाथ में गरीबों की, दुखियों की सेवा का तथा परोपकार का काम और दिल में राम—ये तीन बातें होंगी, वहाँ 'जनेऊ' जैसी चीज होगी, जिसमें तीन धागे होते हैं। इन तीन धागों को लेकर बँट दिया जाय तो भक्ति की मजबूत रस्सी बनेगी।

यह बात लोगों को समझा दीजिये तो फिर लोगों के ध्यान में आयेगा कि जिस शख्स ने जमीन दी, उसने भक्ति की। जिसे जमीन मिलेगी, वह कहेगा कि आपने जमीन तो दी है, लेकिन मेरे पास बोने के लिए बीज नहीं है तो जमीन देनेवाला कहेगा कि इसे बोने के लिए मैं अनाज दूँगा। जिसने जमीन दी, वह बीज देने से इन्कार नहीं करेगा। प्रेम से बीज दे देगा। फिर जिनके पास जमीन नहीं, लेकिन सम्पत्ति है, वे भी बीज दान देंगे। जिस बेजमीन को जमीन मिली, उसके पास अभीके लिए खाना न हो तो गाँववाले कहेंगे कि हम सब मिलकर उसका एक महीने का खाने का इन्तजाम कर देंगे। इस तरह जहाँ प्यार से काम होगा, वहाँ आगे क्या होगा, यह सवाल ही पैदा नहीं होता है। आपने अपनी लड़की की शादी की और देखा कि दामाद तंग हालत में है तो आप उसे मदद देते ही हैं, क्योंकि आपने उसे प्रेम से लड़की दी है। जहाँ प्रेम से आप एक काम करते हैं, वहाँ प्रेम से आप दूसरा काम भी कर सकते हैं। इस तरह प्रेम से आप एक के बाद एक काम करते चले जाते हैं तो हमारा दिल पाक, शुद्ध बनता है।

गलत सवाल

मेरी उम्र ६४ साल की है। आज तक मैंने रोज स्नान किया है। लेकिन अगर मैं दस दिन स्नान न करूँ तो शरीर गन्दा बनेगा। हम शरीर को हर रोज धोते हैं। यह नहीं कि तू तो गंदा बनता जाता है, मैं कब तक तुझे धोता रहूँगा। बल्कि हम यह कहते हैं कि मैं हार नहीं खाऊँगा। तू जितनी दफा गन्दा बनेगा, उतनी दफा मैं तुझे साफ करूँगा। उसी तरह परोपकार में भी हार नहीं खानी चाहिए। हमने आज दान दिया, क्या कल भी देना पड़ेगा? यह सवाल बेवकूफी से पूछा जाता है। क्या आप यह पूछते हैं कि हमने आज खाना खाया तो क्या कल भी खाना पड़ेगा? आपको कल खाना पड़ेगा, परसों खाना पड़ेगा, उसी तरह आज दिया तो कल भी देना ही पड़ेगा। परसों भी देना पड़ेगा। जब तक हम खाते रहते हैं, तब तक देते रहना है। नदी अपना पानी आगे ढकेलती है तो पीछे से पानी आता रहता है। उसी तरह हम देते रहेंगे तो हमें भगवान से मिलता रहेगा। देने से हृदय बिलकुल धुल जायगा, स्वच्छ, पाक बनेगा और हम नरदेह में आये हैं, इसका हमें एहसास और खुशी होगी।

एक सियासतवाले भाई ने सवाल पूछा है कि जमीन का मसला कब तक हल होगा? मैंने विनोद में कहा कि किसी ज्योतिषी से पूछकर शनि, मंगल को देखकर बताऊँगा। समझना चाहिए कि आप बेकार बैठते हैं, काम नहीं करते तो मसला कैसे हल होगा। ऐसी अश्रद्धा क्यों होनी चाहिए कि काम नहीं होगा। हमें समझना चाहिए कि इस काम में हम दूसरों पर उपकार नहीं करते हैं। यद्यपि परोपकार का नाम होता है, फिर भी इसमें हम अपने पर ही उपकार करते हैं। भूदान से दूसरों को मदद मिलती है, लेकिन उससे हमारा दिल मजबूत होता है। जमीन पानेवाले को जितनी खुशी होती है, उससे ज्यादा खुशी देनेवाले को होती है। भूखे को खिलानेवाले को ज्यादा खुशी होती है बनिस्बत खानेवाले के। जिसे खाना मिलता है, उसे जिस्मानी खुशी होती है, लेकिन खिलानेवाले को रूहानी खुशी होती है। खानेवाले की भूख मिटती है, लेकिन खिलानेवाले को अन्तः समाधान होता है, इसलिए उन दोनों खुशियों का कोई मुकाबला नहीं हो सकता है।

www.vinoba.in

जंगली कानून से बचिये

सर्वोदय में सबका भला होता है। दुनिया में सर्वोदय के अलावा जो दूसरे उसूल चलते हैं, उनमें कुछ लोग सुखी तो कुछ दुखी बनते हैं। जमीनवालों से जमीन छीनकर गरीबों में बाँटी जाय तो जमीनवाले जो पहले सुखी थे, दुखी बन जाते हैं, इस तरह एक को दुखी बनाकर दूसरे को सुखी बनाने में क्या फायदा है? सर्वोदय का बड़ा उसूल और बड़ी खूबी यह है कि उसमें सबका सुख सधता है। एक के सुख में दूसरे का दुख यह तो जंगल का कानून है। शेर हिरन के पीछे दौड़ रहा है; उसने हिरन को पकड़ा तो शेर सुखी और हिरन दुखी होता है। यही कानून हम अपने समाज में लागू करेंगे तो इन्सानियत कहाँ रहेगी? सर्वोदय में हम सबको सुखी बनाने की बात करते हैं। उसके लिए यह जरूरी है कि जो नीचे हैं, उन्हें ऊपर उठाने के लिए ऊपरवाले जरा नीचे झुक जायँ। बच्चे को उठाने के लिए माँ झुक जाती है। वैसे ही अपने गरीब पड़ोसी को ऊपर उठाने के लिए हम जरा नीचे झुक जायँ। अपने पास जो है, उसका बोझ कम कम करके थोड़ा उसे देते हैं तो दोनों राजी हो सकते हैं। हम इस तरह करेंगे तो देश की ताकत बढ़ेगी और धर्म और सुख एक साथ बढ़ेंगे।

पूँजीवाद और साम्यवाद चचेरे भाई हैं

कम्युनिज्म में एक सुखी बनता है तो दूसरा दुखी। वैसा करने का उनका इरादा नहीं है। लेकिन उनका तरीका ही ऐसा है कि एक को सुखी बनाने के लिए दूसरे को दुखी बनाना जरूरी हो जाता है। पूँजीवाद में मजदूरों के कन्धों पर चन्द लोग बैठते हैं। इस तरह क्या पूँजीवाद और क्या कम्युनिज्म, सबमें यही बात है कि एक का सुख और दूसरे का दुख। लेकिन सर्वोदय में सबका सुख सधता है और उसके लिए हम तरीका भी ऐसा लेते हैं कि माली तरक्की के साथ अखलाकी और रुहानी तरक्की भी होती है। यह बात सिर्फ सर्वोदय में ही सधती है। इसलिए सर्वोदय का विचार जितना फैलेगा, उतना सबका भला होगा। ◆◆◆

प्रार्थना-प्रवचन

हमीरपुर (जम्मू) १८-९-'५९

साथ रहें! सहयोग करें!!

[प्रार्थना-सभा के समय वर्षा हो रही थी, फिर भी जनता शान्ति से बैठी पू० बाबा के विचार सुनने को प्रस्तुत थी। उस समय सभीको सम्बोधित करते हुए बाबा ने यह सन्देश दिया। सं०]

परमेश्वर बारिश बरसाता है। लेकिन हम अगर हाथ पर हाथ धरे बैठे रहें तो फसल नहीं उगती, घास उगती है। परमेश्वर हमको तब मदद करता है, जब हम खुद मेहनत करते हैं और सभी मिल-जुलकर प्यार से रहते हैं।

माँ का दिल

एक थी माँ। उसके पाँच बच्चे थे। वे बड़े प्यार से रहते थे। एक दिन उसका एक बच्चा खो गया। माँ बेचैन हो गयी। वह उसे ढूँढने लगी। चारों बच्चे भी उसे ढूँढ़ते रहे। लेकिन वह मिला नहीं तो वे माँ से कहने लगे—माँ, हम चार तो हैं, पाँचवा अब नहीं ही मिलता है तो इतनी परेशान क्यों होती हो? माँ ने कहा—बेटों, तुम चारों तो अच्छे हो, इसलिए अब तुम्हारी चिन्ता क्या करनी है! वह खो गया है, जरूर कहीं कष्ट में पड़ गया है, इसलिए उसीकी फिक्र है। माँ का दिल हमेशा उसीके साथ रहता है, जो बहुत तकलीफ में होता है।

परमेश्वर हमारी माँ है। उसे भी ज्यादा फिक्र उसकी होती है, जिसके पास जमीन नहीं होती, जायदाद नहीं होती और जिसे कोई इमदाद नहीं करता है! गये-बीते की चिन्ता परमेश्वर के सिवाय कौन करता है?

हम क्यों घूम रहे हैं?

हिंदुस्तान में ज्यादा जमीन नहीं है। फिर भी किसीके पास तो ज्यादा जमीन है और किसीके पास बिल्कुल नहीं है। कोई सुखी है और कोई दुःखी है। सुखी दुःखियों की तरफ ध्यान नहीं देंगे तो हमपर परमेश्वर का गुस्सा उतरेगा। इसीलिए हम समझाते हैं कि दुःखियों को ढूँढो, उन्हें दिलासा दो और कहो कि जब तक आप दुःखी हैं, तब तक हमसे सुख बरदाश्त नहीं हो सकता है। यद्यपि हम भी गरीब हैं, फिर भी आपकी मदद करना चाहते हैं। हम गरीब और दुःखी के पास जायँ और उसे इत्मीनान दें।

किसीके पास १०० एकड़ जमीन है तो वह पचास एकड़ जमीन गरीबों को दे और किसीके पास पाँच एकड़ जमीन है तो वह एक एकड़ दे। एक एकड़ में कोई क्या करेगा? यह मत सोचिये। जिसके पास बीस एकड़ जमीन है, वह चार एकड़ जमीन दे। उसके पास १६ एकड़ जमीन बचेगी, उसमें भी वह उतनी ही मेहनत करेगा, जितनी बीस एकड़ में करता था तो उसे कोई नुकसान नहीं होगा और उधर चार एकड़ में एक गरीब बेजमीन के बाल-बच्चे पल जायँगे। छोटे-बड़े जितने भी मालिक हैं, उन्हें अपने गरीब, दुःखी भाइयों को देना चाहिए, यही समझाते हुए हम आठ साल से बराबर घूम रहे हैं।

प्रेम की बात

अब हम और कितने दिन जिंदा रहनेवाले हैं? थोड़े से दिन। इसलिए हम सर्दी, गर्मी और बारिश में बिना रुके गाँव-गाँव जाते हैं और लोगों को प्रेम की बात समझाते हैं। यही देखिये, इस सभा में ये बहनें बच्चों को लेकर बारिश में बैठी हमारी बातें सुन रही हैं। वे यहाँ इसीलिए आयी हैं कि बाबा की बात उनके दिल को प्यारी लगती है। अगर बाबा सबको खाओ, पीओ और मौज करो, ये बातें कहता तो ये यहाँ न आतीं और न हमारी बातें ही सुनतीं। हम चाहते हैं कि सबका दिल के साथ दिल जुड़े, सभी धर्मोंवाले, सभी जातियोंवाले और सभी वर्गोंवाले लोग गाँव में प्रेम से रहें और एक-दूसरे की मदद करें। ◆◆◆

अनुक्रम

१. सम्यक् जीवन के लिए सम्यक् दृष्टि की आवश्यकता
कठुआ १९ सितंबर '५९ पृष्ठ ७४३
२. इस तहरीक का नाम है सर्वोदय, जिसके मानी हैं सबका भला
टिकरी ५ सितंबर '५९ ,, ७४४
३. साथ रहें! सहयोग करें!!
हमीरपुर १८ सितंबर '५९ ,, ७४६

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।
पता: गोलघर, वाराणसी (उ० प्र०) फोन: १३९१ तार: 'सर्व-सेवा' वाराणसी
www.vinoba.in